रविवार, दिनाँक 21-07-2024, मीटिंग के दिवस सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सभी सजनों को जय सीता राम जी

आओ जागें और जगाएं।

हर इक को यह ज्ञान कराएं।।

कलुकाल है जाने वाला।

सतवस्तु है आने वाला।।

सतवस्तु की रमज़ बताकर

सत पर चलना उन्हें सिखाएं।।

जय साजन की - जय साजन की।

जय साजन की जय जयकार।।

सतवस्तु सत बोल-चाल।

सतवस्तु सत रसम-रिवाज़।।

सतवस्तु का है श्रृंगार ।

शंख, चक्र, गदा, पद्मधार।।

आओ मिलकर इसे अपनाएं ।

एकता के प्रतीक बन जाएं।।

जय साजन की - जय साजन की।

जय साजन की जय जयकार।।

सतवस्तु दी चाल कमाल।

सतवस्तु राज अटल विशाल।।

चमके शक्ति दा हथियार।

इस की ताकत अपर अपार।।

आओ वचन करें प्रवान।

हमको बनना है महान।।

जय साजन की - जय साजन की।

जय साजन की जय जयकार।।

सतवस्तु में खुला प्रकाश।

कला हमारी का प्रताप।।

जप-तप से रहो आज़ाद।

करन करावन आपे आप।।

यही समय है जीवन बनाओ।

ज्योति में जोत हो जाओ।।

जय साजन की - जय साजन की।

जय साजन की जय जयकार।।

सतवस्तु में शब्द विचार।

एकता, एक अवस्था का प्रसार।।

मैं तूं में फ़रक मत जानो।

अपने आप को खुद पहचानों।।

फिर यहीं है साजन सच्ची सरकार।

जिन से हम सबको है प्यार।।

सतवस्तु आई मिले बधाई।

देखो कैसी है रौशनाई।।

अब आगे सुनोः-

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

आत्मपद दा रस्ता बता रहे ने, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।

मोह माया दी नींद विच घूक सोये, महाबीर जी आके जगा रहे ने।

भैणां पाप न करो धर्म मार्ग चलो, बली ए उपदेश सुना रहे ने।।

शास्त्र महाबीर दा रस्ता बताया ए, बली सांवले चरण दिखा रहे ने।

सांवले चरणां दे मालिक महाबीर जी, दर्शन सारियाँ भैणां नू करा रहे ने।।

किसे नू युक्ति देवन किसे नू उपदेश देवन, सिया राम लषण नू मिला रहे ने।

दिन चाह विच गुजरे रातीं नींद आवे, ओ शान्ति उपदेश सुना रहे ने।।

जेहड़ी भैण महाबीर जी दा नाम ध्यावे, ओहनू मुक्ति दी पदवी दिवा रहे ने।

कलयुग ने है सब नू घबराया, महाबीर कलयुग नू आप हटा रहे ने।।

अग्गे सेवकां नू महाबीर जी भेजदे रहे, हुण चरणां दे मालिक आप आ गये ने।

सदके जावां सदके जावां महाबीर जी तों, जेहड़े सब दियां आशा पुजा रहे ने।।।

दासी चरणां तों बलिहार जावे, सानू भुलियां नू रस्ते ला रहे ने।

खबरदार खबरदार खबरदार रहो, महाबीर जी दुनियां विच आ गये ने।।

इस भजन के माध्यम से सच्चेपातशाह जी बड़े सहज और सरल शब्दों में हम कलुकालवासियों को शुभ सन्देश दे रहे हैं कि हे सजनों ! चाहे आप भूलवश या नकारात्मक परवरिश के कारण कलुकाल के भाव-स्वभावों में उलझ चुके हो और जीवन का हर क्षण परेशानी में व्यतीत कर रहे हो व आपको इस उलझन से बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं सूझ रहा, पर इस संदर्भ में जानो कि इस महान दुःख का निवारण करने हेतु अब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दुनियाँ में आ गये हैं। उनके वचनों को प्रवान करके आप सहज ही कलुकाल के प्रभाव से मुक्त हो सत्य के प्रतीक बन सकते हो। सजनों जब सत्य के प्रतीक बनोगे तो फिर धर्म के मार्ग पर चलना सुलभ हो जायेगा यानि कोई कठिन कार्य नहीं रह जायेगा। इसलिए सच्चेपातशाह जी आवाहन दे रहे हैं कि ए विध् जागृति में आकर धर्म-मार्ग पर चलना आरम्भ कर दो। जानो ऐसा सुनिश्चित करने पर ही आत्मपद की प्राप्ति कर सकते हो। फिर वह कहते हैं कि आत्मपद की प्राप्ति हेतु जिस विध् सजन श्री शहनशाह हनुमान जी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ द्वारा आत्मज्ञान प्रदान कर रहे हैं, उस आत्मज्ञान को समझकर धारण करते हुए यथा व्यवहार में ले आओ और आनन्दमय जीवन जीना सुनिश्चित करो। ऐसा पुरुषार्थ दिखाकर अपना ख़्याल-ध्यान उन सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के संग जोड़ लो, जो चरणों के यानि आत्मज्ञान के मालिक हैं। ज्ञात हो, इस तरह आपको सभी दुःखों से मुक्ति प्राप्त हो सकती है। अतः अज्ञानमय अवस्था से उबरकर अपनी यथार्थ ज्ञानमय अवस्था में आ जाओ और यथार्थतापूर्वक जीवन जीना आरम्भ कर दो। सजनों जानो तभी निष्पाप जीवन जीते हुए निर्विकारी कहला सकोगे। अब निर्विकारी कौन है यह तो आप जानते ही हो। निर्विकारी - परमात्मा है। इसका मतलब यह हुआ कि निर्विकारी बनकर आप अपने स्वरूप को पा सकते हो और फिर वैसे ही शक्तिशाली बनकर, निर्भयता से इस जगत में निषंग विचरने के काबिल बन सकते हो। ऐसा करने पर ही आपका मन शान्त अवस्था में सधा रह सकता है। अब मन शान्त अवस्था में सध गया तो जानो कि आपके ख़्याल ने पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों से टप्पा मारकर अपने स्थान को प्राप्त कर लिया और विश्राम पा लिया यानि आपका मन शान्त, मस्तिष्क शान्त हो गया और आप एक अवस्था में आ गये। फिर चाहे आपके जीवन में या आपके आस-पास की दुनियाँ में कुछ भी घटित हो, तो भी आप कदापि विचलित नहीं हो सकते क्योंकि आप जान जाओगे कि मै अमर आत्मा हूँ, मैं निर्भय हूँ। इस तरह आप अपनी यथार्थ एकता, एक-अवस्था में बने रह समदर्शन कर सकते हो।

सजनों जानो, आज मीटिंग के दिन जैसा कि आपने गाया है – 'जागो और जगाओ', वैसे ही इस भजन का एक-एक शब्द समझते हुए खुद जागो और सबको जगाओ। खुद जागने व अन्यों को जगाने हेतु आपको आज अन्य युक्ति भी प्राप्त होगी, उसके लिये अनथक परिश्रम करना होगा और हारना नहीं होगा क्योंकि हार से तो निन्दा प्राप्त होती है और विजय से यश प्राप्त होता है अतः यशस्वी बनना है। अब आगे कीर्तन सुनोः

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

किस तरह बताऊं दुनियां दी बात, किस तरह बताऊं दुनियां दी

बिगड़ी बात संवरे किस तरह किवें रहूं रखवाल।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

दुनियां दी घट गई आरबला ओ किस तरह पकड़न ख्याल।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

गरुड़ ते आये लक्ष्मी संग भगवन, जनता करे प्रणाम।।

हथ जोड़ करे चरण बन्दना, कोटि कोटि प्रणाम।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

जनता जब बोलना चाहा, बोल उठे हनुमान।।

नाम युक्ति असां बक्षी, तुसां वचन न कीते प्रवान।

ओ इन्सानों, ओ इन्सानों, ओ इन्सानों।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।।

(जनता कह रही है)

नगर निवासियां दी हर लई बुद्धि, बुद्धि मनुराज ही जान।

दाता जी बल बुद्धि विद्या बक्षो, हनुमान बलवान।

हनुमान बलवान, हनुमान बलवान, हनुमान बलवान।।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

हनुमान जी सबदी सुनदे आरजू, साडी वी सुणेन।

चरण शरण लई हनुमान जी दी, हुण साडी वी मनन करेन।।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।

ओ ओ ओ ओ ओ ओ ओ।

बुद्धि हीन असां हो गए, साडी बुद्धि वी तीक्ष्ण करेन।।

मनुराज विच बुद्धि गोते खांदी, ओन्हुं वी तरना सिखैन।

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना, ओ मेरे साजना।।

सजनों हम तो हैरान होते हैं कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का एक-एक शब्द कितना महान और शिक्षाप्रद है जिसका अनुसरण कर कोई भी मानव दिलचस्पी में आकर, अपनी कायाकल्प कुछ दिनों में ही कर सकता है। काया-कल्प से तात्पर्य है कि कलियुगी भाव-स्वभाव छोड़कर आत्मीयतापूर्ण स्वभावों का ताना-बाना बुनने में सक्षम होना व इस जगत में सकारात्मकता से विचरना। सजनों इसमें केवल प्रयास करने की आवश्यकता है अतः प्रयास करके अपने सच्चे मित्र व हितैषी बनो और ऐसा परिवर्तन लाकर अपने जन्म की बाज़ी जीतने में समर्थ हो जाओ। ऐसा कर लिया तो समझ लो कि जीवन का कारज इसी जीवन में ही पूर्ण हो जाएगा।

इस संदर्भ में इस कीर्तन के अंतर्गत दयालु श्री रामचन्द्र जी परोपकारी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी को बार-बार कह रहे हैं कि जनता का दुःख निवारण करो और इन्हें आत्मपद की प्राप्ति करने के योग्य बना दो। परन्तु इस पर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी उन्हें कहते हैं कि इनकी तो आरबला ही समाप्त हो चुकी है यानि इन्होंने जो नकारात्मकता को

अपना कर, मन-वचन-कर्म द्वारा नकारात्मक कर्म किये हैं उसके दृष्टिगत ऐसा करना असम्भव सी बात लगती है। वह कहते हैं कि हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि यह सजन सत्संग में आते हैं, वचन भी सुनते हैं पर उनको स्वीकारते हुए प्रयोग में नहीं लाते। अब जब यह परमेश्वर के वचन ही नहीं प्रवान करते तो इनका उद्धार या सुधार कैसे हो सकता है?

इस सन्दर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि अपनी हालत को समझते हुए, कम से कम आज मीटिंग वाले दिन अपने पर तरस खाओ और दृढ़-संकल्पी हो कहना मानने वाले सुपुत्र बन जाओ। जानो यह परिवर्तन ही 'आध्यात्मिक क्रान्ति' है। इस 'आध्यात्मिक क्रान्ति' के तहत् अब दुनियाँ को सुनना और उसी अनुरूप कार्य-व्यवहार करना त्यागकर, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों अनुसार मन-वचन-कर्म को साधना है। जानो ऐसा करने में कोई भी कठिनाई नहीं है क्योंकि कुदरत की धरोहर सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ यानि सत्य ज्ञान रूप में हमारे घर में है। अतः इसका अध्ययन, चिन्तन व मनन करो यानि शब्द विचार पकड़ कर इसकी गहराई में उतर जाओ और हीरा बन जाओ। ऐसा करने पर जब आपकी स्वाभाविक पोशाक हीरे-जड़ित हो जाएगी तो अत्यन्त सुन्दर लगोगे। फिर आपको कृत्रिम हीरे पहनना अच्छा नहीं लगेगा क्योंकि तब आपकी आत्म-शुद्धि हो जायेगी, आत्मा प्रकाशित हो जायेगी। इस तरह जब अन्दर आत्मप्रकाश समरसता से स्थिर हो गया तो जो मन-मन्दिर में है वही जग अन्दर नज़र आयेगा जो कि एकरूपता का द्योतक है। सजनों जानो तब सभी कलुकाल के स्वभाव समाप्त हो जायेंगे यानि कलुकाल छँट जायेगा और सतवस्तु का राज स्थापित हो जायेगा यानि सत्य प्रकाशित हो जायेगा। अब जब सत्य प्रकाशित हो गया तो आप अपने वास्तविक मानव धर्म अनुसार, जीवन में जो भी करोगे सर्वहित को दृष्टिगत रखते हुए ही करोगे। सजनों अगर आज ऐसा निश्चय ले लेते हो और तद्नुकूल पुरुषार्थ दिखाते हो तो यकीन मानो कि जीवन में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी। बस, इतनी सी बात को अमल में लाना है कि जो भी मैं करूँ या बोलूँ उसमें सर्वहित निहित हो। इस संदर्भ में मानो कि अगर मै किसी का नुक्सान करके कुछ करता हूँ तो मैं निःसन्देह स्वार्थी हूँ और अगर मैं कुदरती नियमानुसार करता हूँ तो मैं परमार्थी हूँ।

सजनों अतः आज अपने अन्दर आध्यात्मिक क्रान्ति लानी ही लानी है और स्वार्थ से परमार्थ बन जाना है। इस हेतु जो वचन सुने हैं उनको धारण करके अमली जामा पहनाना है। ऐसा करने से ही आपका मन शान्त और चित्त प्रसन्न रहेगा। याद रखो जब मन शान्त और चित्त प्रसन्न रहता है तो बौद्धिक शक्ति प्रबल हो जाती है क्योंकि तब मन चित्त को अपनी खुराक

मिल जाती है अन्यथा तो आपकी बुद्धि को मन हर लेता है। जैसा कि अभी आपने सुना ही है किः-

'बुद्धि डिग्गी मनुराज विच हार जीव ने खायी'

जब ऐसा होता है तो इससे सजनों यह सन्देश मिलता है कि अमुक जीव हारने वाला है, अतः सावधान हो जाओ। फिर भी अगर जीव सावधान नहीं होता तो नरकों का द्वार तो खुला ही है और उसमें उसका प्रवेश करना भी निश्चित ही होता है। किसी के जीवन का भी अन्त ऐसा न हो इस हेतु हम तो यही कहेंगे कि अभी भी वक्त है इंसानियत में आ जाओ। बाकी तो व्यक्तिगत रूप से आप पर निर्भर करता है कि आप अपने जीवन के बाद किस द्वार में प्रवेश करना चाहते हो - नरकों के द्वार में या दसवें द्वार में। इसका चयन आपको स्वयं ही करना है क्योंकि आप की किस्मत कोई अन्य नहीं बना सकता। अतः अपना भाग्य-निर्माता स्वयं बनना होता है। इस हेतु सजनों महाबीर जी की युक्ति अपना कर किस्मत का ताला खोल दो। इस संदर्भ में हम तो यही कहेंगे कि हे ईश्वर ! किसी की भी किस्मत बन्धी हुई न हो क्योंकि बन्धनमान किस्मत में बहुत दुःख व परेशानी होती है। सजनो अब अपने सजन बन जाओ और हिम्मत दिखाओ व परोपकारी नाम कहाओ। अब आगे कीर्तन सुनोः

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

गरुड़ ते भगवन चल पड़े, दरबार पहुंचदियाँ ऊपर फुल वर्षे।

वर्षे बेशुमार फुल्लां दी झड़ी हो गई, हेठां संस्था बैठी सी उठ के खड़ी हो गई-

हथ जोड़ उठ के खड़ी हो गई।।

-कव्वाली-

वक्त दे मुताबिक सजन ओ वक्त दे मुताबिक सजन, ओ सब कोई प्यार करता है।

सब कोई प्यार करता है, ओ सब कोई प्यार करता है।

वक्त दे मुताबिक सजन ओ सब कोई प्यार करता है।।

ओ जदों वृद्ध अवस्था आवे हां हां जदों वृद्ध अवस्था आवे, फ़र्ज़ अदा से डरता है।

जदों वृद्ध अवस्था आवे, फ़र्ज़ अदा से डरता है।।

फ़र्ज़ अदा है ओ जीत, बाज़ी जित लई उस अपनी।

जीत सदा ही जीत सजनों जीत सदा ही जीत।।

फ़र्ज़ अदा करो इन्सान, फ़र्ज़ अदा है बड़ा महान।

इस बात दा विचार जेहड़ा सजन करदा है।।

फ़र्ज़ अदा दी महिमा है महान, फ़र्ज़ अदा करो इन्सान।

ओ बेख़ौफ़ा बेख़तरा ही विचरदा है, ओ बेख़ौफ़ा बेख़तरा ही विचरदा है।।

फ़र्ज़ अदा जेहड़ा करे इन्सान, बुद्धि लई उस अपनी पहचान।

इन्सानां विचों अक्लवान, उस जीवन अपना बना ही लिया, पा लिया आत्मिक ज्ञान।।

आत्मिक ज्ञान उसने पा लिया, ओहदी जोत जगे निर्वाण।

ओहदा रूप रंग न रेखा राहवे, ओ पहुंच गया परमधाम।

परमधाम ओ पहुंच गया, बेअन्त है ओहदा नाम।।

जेहड़ा खुश हो के करे फ़र्ज़ अदा, ओहदे ते खुश किवें न होवन परवरदिगार।

ओ महाराज जी दे दर्शन पांदा है, ओ जीवन सफल बनांदा है।

जैं जीवन सफल बना लिया अपना, ओ फिर नहीं पछोतांदा है।।

ध्वनिः-

स्वार्थी मतलब दे, मतलब दे हिन यार, स्वार्थी मतलब दे।

मतलब जेहड़े वेले निकल गया, फिर करदे नहीं ओ प्यार।

स्वार्थी मतलब दे, मतलब दे हिन यार, स्वार्थी मतलब दे।।

शब्दः

ओहदी जोत जगे मन मन्दिर।

ओहदी जोत जगे जग अन्दर।।

सब सजन जागृति में बैठो, बुद्धिमान बनो और अपनी बौद्धिक-शक्ति को बढ़ाओ। इस संदर्भ में इस कीर्तन द्वारा स्वार्थ और परमार्थ दोनों के विषय में जो बताया गया है, उसे समझो। अब बताओ कि परमार्थ आसान है या स्वार्थ? कौन सा भाव अपनाना आसान है?

'परमार्थी भाव'।

परमार्थी भाव यानि समभाव-समदृष्टि अपनाना आसान है और स्वार्थी भाव यानि तेरी-मेरी का भाव कठिनाईयों को आमन्त्रित करना है। जानो कि परमार्थी भाव अपनाकर समभाव-समदृष्टि हो जाने से निर्वाण पद की प्राप्ति होती है जो कि सर्गुण-निर्गुण से भी ऊपर है। अतः सर्गुण, निर्गुण को समरस जानना है और इससे ऊपर उठना है ताकि यह दुविधा हमें किसी प्रकार से भी छल न सके। अब निर्वाण पहुँचने के लिए निश्चित ही आत्मिकज्ञान की आवश्यकता होती है। अतः आत्मिकज्ञान की महत्ता को समझो, बार-बार कह रहे हैं कि सत्-शास्त्र का अध्ययन करना शुरु कर दो। यकीन मानो कि ग्रन्थ में जो आत्मिकज्ञान विदित है उसे अपनाकर व उस अनुरूप अपना आचार-विचार व व्यवहार अपनाकर, निश्चित रूप से आप परमधाम पहुँच विश्राम को पा सकते हो। अतः आत्मज्ञान प्राप्त करो क्योंकि ऐसा करते ही आपकी जोत निर्वाण में जगमगा उठेगी यानि आप ज्योति नाल जोत हो जाओगे और परमधाम पहुँच विश्राम को पाओगे। अगर इसके विपरीत क्रिया की तो लोगों को आप छलते रहोगे और लोग आपको छलते रहेंगे। कलियुग में तो आप सबको सतर्क रहने की बहुत आवश्यकता है। अब बताओ कि आपको स्वार्थ पसन्द है या परमार्थ?

'परमार्थ'।

तो फिर परमार्थ बनने हेतु किस ज्ञान की आवश्यकता है?

'आत्मिक ज्ञान की'।

इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि स्वार्थी बनने के लिये तो आधा-अधूरा भौतिकज्ञान उपलब्ध है ही, पर यह भौतिक ज्ञान आज तक न तो किसी को पूर्ण रूप से मिल सका है और न ही मिल सकता है क्योंकि यह ज्ञान तो बदलता रहता है। इसके विपरीत आत्मिकज्ञान आद् ज्ञान है और हमारा अपना ज्ञान है जबकि भौतिकज्ञान दूसरे का ज्ञान है। अपना ज्ञान, अपनी संस्कृति छोड़कर दूसरों की संस्कृति अपनाना तो अपने पद से गिरने की बात होती है जो कि अपने साथ द्रोह करने जैसी बुरी बात है। अब एक दफा जो इस मौके का लाभ उठा ठगकर ले जाता है उसके बाद वह बात करना भी पसन्द नहीं करता। सजनों कलियुग का यही हाल होता है। अतः किसी पर दया करनी हो तो बड़ी समझदारी से करनी होती है अन्यथा उम्र भर पछताना पड़ता है। कलियुग में इन्सान की नीयत बदनीयत होती है। यह कदाचित अच्छा स्वभाव नहीं होता क्योंकि इसका अन्त परिणाम बुरा ही निकलता है। तो बताओ कि आपको कौन सा ज्ञान प्राप्त करना है?

'आत्मिकज्ञान'।

सजनों आपको पता तो है आत्मिकज्ञान, लेकिन आप इसे प्राप्त नहीं करते। अब ऐसा नहीं करना अपितु अपने सजन बन आत्मिकज्ञान प्राप्त करने में समय लगाना। शुरु-शुरु में कठिनाई अनुभव होगी क्योंकि भौतिकज्ञान इस समय दिल-ओ-दिमाग पर हावी हुआ पड़ा है। अतः हिम्मत करके उस बोझ को उतारना होगा यानि अज्ञानमय अवस्था से उबरने के लिये खुद पर अंकुश रखना होगा और एक विश्वास के साथ आगे बढ़ना होगा। फिर पन्द्रह अगस्त को आध्यात्मिक क्रान्ति के अन्तर्गत आपको बताया जायेगा कि शारीरिक दुर्भावों व बाल-अवस्था के भक्ति-भाव से कैसे स्वतन्त्र होना है और युवा-अवस्था के भक्ति भाव को कैसे अपनाना है?

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों आपको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसार - समभाव-समदृष्टि के कीर्तन वाली किताब भावार्थों सहित पढ़ने हेतु कहा हुआ है, तो उनको समझकर पढ़ना है ताकि पन्द्रह अगस्त को आपको पूरी बात समझ में आ जाये और आपके अन्दर आध्यात्मिक क्रान्ति छिड़ जाये व आप विजयी हो आत्मज्ञानी बन जाओ। वह दिन आपके लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। अतः एक मिनट भी निन्दा-चुगली में नहीं लगाना, केवल इस कार्य की सिद्धि में लगाना है। अब मीटिंग के वचन सुनोः-

पर्चा नम्बर - १

(पर्चा २३-०७-१९७२ इतवार सावन की मीटिंग का आया यह पर्चा हमेश के लिये है)

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

सजन जी, जय सीताराम जी।

आपकी ओर से अभी तक कोई सूचना नहीं आई कि कितने सजनों ने अपने घर सतयुग बना लिए हैं। जो सजन ग्यारह शब्दों पर खड़े हो गये हों और घर सतयुग बना लिए हों वह दो सजन हों चाहे चार हों या जितने भी हों तो उनके नाम लिखकर भेजें। सजनों को कहें कि वह सच बोलें। उनसे तीन बार सच बोलने को कहें कि उनकी 'हौं-मैं' की बिमारी हट गई है या अभी है। 'हौं-मैं' की बिमारी हटाने का अर्थ है कि जिस नाल मैं सजन जग रहा हूँ, उससे सब जग रहे हैं। जिन सजनों की 'हौं-मैं' की बिमारी हट गई हो तो उनकी यश-कीर्ति प्राप्ति कर लेने के बारे में लिख भेजें। इस बात की ओर से सोना नहीं जागना है और दूसरों को भी जगाना है।

आगे वचन इस प्रकार हैं कि सब स्त्री व पुरुष सजनों से पूछें कि जिनके घर में बुज़ुर्ग हैं, वे (स्त्री पुरुष दोनों) इनके साथ कैसा वर्ताव कर रहे हैं, बच्चों के साथ भी कैसा वर्ताव है। बुज़ुर्गों की हर प्रकार से सेवा हँसकर करनी है, ऐसी सेवा करनी है कि घर में कोई कल्पना न होवे। अगर बुज़ुर्गों को क्रोध आ भी जावे तो हुक्म को पकड़ना है, अन्दर खेद न आवे। घर में स्त्री-पुरुष का कोई झगड़ा हो जाता है तो वह गुस्सा बच्चों पर या बुज़ुर्गों पर निकलता है। हमें चाहिए कि ऐसी चाल चलें कि घर में कोई झगड़ा न हो। स्त्री पति ठीक तो बच्चे भी ठीक और बुज़ुर्ग भी ठीक। अगर बुज़ुर्गों को खान-पीन, बोल-चाल इत्यादि की तरफ से ठीक रखा जावे तो उनको क्रोध क्यों होवे। सब सजनों को समझौता देवें कि वह बुज़ुर्गों की ऐसी सेवा करें कि उनसे आसीस मिलें और बुज़ुर्ग कहें कि उनके घर में कैसी तबदीली आ गई है, घर पहले कैसे था अब कैसा हो गया है। हर तीन महीने के बाद जो बुज़ुर्ग सभा में न आ सकें तो उनके नामी सजनों से पूछें कि वह अपने बुज़ुर्गों के साथ कैसा वर्ताव कर रहे हैं। अगर वर्ताव ठीक नहीं तो सजनों को चेतावनी देवें कि एक दिन उन्होंने भी बुज़ुर्ग होना है, जैसे वह इस समय वर्ताव करेंगे वैसे उनको भुगतना पड़ेगा। गुरुवाणी का शब्द 'जासो पर नूं आसवे घर नूं' इसलिए सब सजन जिनके घर बुज़ुर्ग हैं, उनकी सेवा हर प्रकार से हँसकर करें और यश-कीर्ति की प्राप्ति करें। श्री महाबीर जी के द्वारे पर यश-कीर्ति आवे, अपयश न आवे। यह महाराज जी के वचन हैं, हम सब सजनों ने इनकी पालना करनी है 'महाबीर जी दे वचनां दी सजनों करो पालना'। इन

वचनों को भी ध्यान में रखना है कि कोई सजन भूलकर अपनी मानता न करावे। अब गुरु-चेले का अर्थ निकल चुका है, विचार शब्द और बोर्डों का भी अर्थ निकल चुका है। अन्त में तीनों तापों अर्थात आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक का भी अर्थ बता दिया गया है इसलिए कोई सजन भी भूलकर अपनी मानता न करावे। वह शहनशाह घड़ी-घड़ी, पल-पल, क्षण-क्षण में देखने वाले हैं, सुनने वाले हैं, हमें उनका डर होना चाहिए। इसलिए कोई सजन भी कोई गलती न खा बैठे और अपनी मानता न कराये।

सजनों को एक बार फिर चेतावनी दी जाती है कि वह नीति के अनुसार चलें, नीति के विरुद्ध न चलें, एकता दिखावें भिन्न-भेद न होवे। सब सजन जहाँ तक हो सके, जल्दी से जल्दी घर सतयुग बनावें फिर वह बेफिकरे राहवें। आप सजनों ने नाम लिया है महाराज जी नाल मेल खाने दी खातिर। सजनों को चाहिये कि वह ऐसा यत्न करें कि पहले तो महाराज जी नाल मेल खा जावो नहीं तो घर सतयुग जरूर बनावें। एक बार फिर लिखा जाता है कि स्त्री-पति ठीक रहें तो बच्चे भी ठीक और बुज़ुर्ग भी ठीक, इसलिए सब सजन अपने बुज़ुर्गों को हर प्रकार से ठीक रखें। श्री महाबीर जी के द्वारे पर सजनों की यश-कीर्ति आवे।

ऊपर लिखे वचनों के अनुसार हर एक सभा में तीन तीन महीने बाद अपनी-अपनी सभा के सब सजनों से पूछ कर गृहस्थ आश्रम ठीक करने, बुज़ुर्गों की सेवा के बारे में लिस्ट बना कर द्वारे पर भेजा करनी है। अर्थात वह लिस्टे साल में चार बार सजनों से दोबरा पूछ कर अस्सों, पौह, चैत्र और आसाढ़ के महीने में बनाकर हमेश भेजते रहनी है। यह लिस्टें एलहदा दो भागों में बनानी है। एक लिस्ट उन सजनों की हो जो स्पुत्र निकलें दूसरी जो पुत्र हों। सुपुत्र सजन वह है जो माता-पिता की सेवा अपने आप करता है और उन्हें फुरना नहीं आने देता। पुत्र वह है जो माता पिता से पूछ कर चले। श्री महाबीर सत्संग सभा चण्डीगढ़, जालन्धर, बरेली, देहली अपनी-अपनी सभा की लिस्टें वक्त अनुसार भेज दिया करें। बाहर की सभायें यह लिस्टें बनाकर पहले अपनी अपनी श्री महाबीर सत्संग सभा को भेजेंगे फिर वह यह लिस्टें द्वारे पर भेजेंगे। यह लिस्टें सब सभायें ठीक वक्त पर भेज करें देरी न करें।

हर साल सावन की मीटिंग के बाद कलुकाल के कीर्तन बोलने शुरु करने हैं। यह कीर्तन इस कीर्तन से शुरु होते हैंः-

'हे स्वामिन कलयुग नूं आप हटा, नारद जी रहे ने बता'

यह वचन हमेश के लिये हैं।

जय सीता राम।

पर्चा नम्बर - २

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान।

सजन जी, जय सीताराम जी।

आगे एक पर्चा २३-०७-१९७२ की सावन की मीटिंग का भेजा था। इस पर एक पत्र सजन पद्म राज जी का आया उसका जो उत्तर दिया गया था सजनों वह सुनों।

मीटिंग के लिये वचन वही हैं जो पर्चे में लिख भेजे हैं या जो वचन चैत्र की मीटिंग पर दिये थे। उन वचनों के अनुसार पहले बाल अवस्था की वृत्ति थी, अब समवृत्ति आ गई है। अब लम्बे लेक्चर बन्द हो गये हैं क्योंकि अन्त आ गया है और तीनों तापों का भी अर्थ निकल गया है। पहला ताप जीत लेने से अर्थात आत्मपद की प्राप्ति कर लेने से बाकी दो ताप (आधिभौतिक और आधिदैविक) बिना यत्नों समाप्त हो जाते हैं इसलिए जिन सजनों को महाराज जी नाल मेल खाने की चाहना है या जिन सजनों ने घर सतयुग बना लिये हैं तो वह यहाँ द्वारे पर आ सकते हैं और समवृत्ति ले सकते हैं। समवृत्ति लेने के लिये सजन पहले अपनी जाँचना-तुलना कर लेवें, फिर द्वारे पर आवें। जो बाकी दूसरे सजन है वह चार पढ़ाईयाँ करके आवें और सभा में नीति अनुसार इतवार, मंगलवार कीर्तन पर भी आवें। घर सतयुग बनावें फिर वे द्वारे पर आते रहें। यह वचन सब सजनों को समझाते आवें।

२ सजनों अब आगे वचन सुनो - सब सजनों को मालूम ही है कि वह सजन श्री शहनशाह जी जिनके चरणों में हम सब सजन हैं, वह अमर हैं। घड़ी-घड़ी, पल-पल, क्षण-क्षण में देखने वाले हैं और सुनने वाले हैं। अब यह पता चला है कि वह नामी सजन जो महाबीर जी के चरणों में हैं उनके बुज़ुर्ग उनके पास नहीं रहते बल्कि बेनामी सजनों के पास रहते हैं। ऐसे नामी सजनों के लिये वचन हैं कि वह इस बात की पड़ताल करें कि उनके बुज़ुर्गों की सेवा बेनामी सजन ठीक तरह से कर रहे हैं या नहीं और उन्हें खुश रखा हुआ है या नहीं। अगर वह वहाँ खुश हैं तो नामी सजन बुज़ुर्गों को अपनी कमाई में से हैसियत अनुसार कुछ दिया करें। अगर वह बेनामी सजनों के पास खुश नहीं और उनकी

सेवा ठीक नहीं हो रही तो नामी सजन फौरन अपने बुज़ुर्गों को अपने पास बुला लेवें और उनकी हर प्रकार से सेवा हँसकर करें और उन्हें खुश रखें। सब सजन बुज़ुगों की ऐसी सेवा करें कि उनकी यश-कीर्ति लोक व परलोक जावे। लोक वह जगह या शहर है जहाँ आप सजन रहते हैं और परलोक वह है जो बाहर के दूसरे शहर हैं। जो नामी सजन इन वचनों को अनुसार बुज़ुर्गों को अपने पास बुला लेवें तो उनकी लिस्ट बनकर अपनी सभा की और बाहर की सभा जो आपकी सभा के साथ है उनकी मंगवाकर यहां द्वारे पर भेजा करनी है।

३ दूसरा - जहाँ-जहाँ सभाओं की मीटिंग हुई है तो महराज जी ने उनके बारे में 'श्री सजन जी' को सब कुछ दिखाया है और बताया है कि मीटिंग के पर्चे को सुनकर वह सारे सजन जिनके बुज़ुर्ग नहीं हैं, वह खुश हुए हैं। इसमें उनकी बड़ी भूल हुई है। उन्हें विचार करना था कि जब उनके बुज़ुर्ग जिन्दा थे तो खान-पीन, बोल-चाल, हँसन-खेडन की ओर से उन्होंने उनकी सेवा ठीक तौर पर की थी या नहीं और उन्हें प्रसन्न रखा था या नहीं। यह सोच करने की बजाये वह हँसे हैं, इस तरह उन्होंने अपनी मन्दी खरीद कर ली है। अब यह मन्दी खरीद उनकी तब समाप्त होगी जब वे अपने घर सतयुग बना लेवेंगे या महाराज जी के साथ मेल खा जावेंगे, नहीं तो जैसे उन्होंने अपने बुज़ुर्गों के साथ सलूक किया होगा, वैसे उन्हें भुगतना पड़ेगा। ऐसे सजन अगर अपने घर जल्दी से जल्दी सतयुग बना लेवें या महाराज जी के साथ मेल खा जावें तो उनका तभी इसमें बचाव है।

४ सावन की मीटिंग का पर्चा और फिर यह पर्चा सभा में महीने में एक बार अंग्रेजी तारीख के पहले इतवार और मंगलवार को पढ़कर सुनाया करें। यह तारीख इस लिये रखी है कि हर सभा में यह एक ही दिन पढ़े जाया करें।

५ ग्रन्थ में सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख का एक कीर्तन है जो इस प्रकार शुरु होता है।

किस तरह बताऊँ दुनियां दी बात किस तरह बताऊं दुनियां की हालत

ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना ओ मेरे साजना..........

दूसरा (१९६२-६३) के शास्त्र में कीर्तन नम्बर-४ श्री साजन जी के मुख की कव्वाली है जिस के शब्द इस प्रकार हैं।

वक्त दे मुताबिक सजन - ओ सब कोई प्यार करता है

ओ जदों वृद्ध अवस्था आवे - फर्ज़ अदा से डरता है

आशा है इन कीर्तनों के अर्थ आपको आते होंगे। हर मीटिंग वाले दिन और महीने में एक बार जैसे ऊपर लिखा है पहले यह दोनों कीर्तन बोला करें और इनका थोड़ा अर्थ कर लिया करें। फिर पहले सावन की मीटिंग वाला पर्चा और बाद में यह पर्चा पढ़ लिया करें। यह दोनों परचे हमेश के लिये हैं।

इन वचनों के माध्यम से सजनों सच्चेपातशाह जी हमें आत्मज्ञान के अनुसार जीवन जीने की हर क्रिया कितनी सूक्ष्मता व सरलता से समझा रहे हैं। अगर यह सब सुनने के पश्चात भी सबके प्रति हम अपने जीवन का फ़र्ज अदा हँसकर नहीं निभाते तो जाहिर होता है कि हमने अभी तक सजनभाव नहीं अपनाया। सजनभाव एकता का प्रतीक होता है। ऐसा इंसान परोपकार प्रवृत्ति में आगे बढ़ता हुआ कोई भी कुर्बानी दिखाने से नहीं सकुचाता। इसीलिए उसके लिये परोपकार कमाना सम्भव हो पाता है। सजनों आपने जो अभी सारा सुना है, उसे ठीक से समझना है और जिन सजनों से पहले गल्तियाँ हुई हैं, उन्होंने भी विचार करना है ताकि उनके बुज़ुर्गों के प्रति उनका जो अधर्मयुक्त व्यवहार रहा उस अन्याययुक्त पाप से छुटकारा प्राप्त हो। फिर पन्द्रह अगस्त को अपना व सबका सजन बनना है और सबको अपने साथ लाना है। इसीलिये यह कार्यक्रम सार्वजनिक अवकाश वाले दिन रखा गया है। आपने अपने साथ अधिक से अधिक सजनों को लाना है और दस बजे तक अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेना है। कार्यक्रम के बीच-बीच में आकर खलबली नहीं मचानी क्योंकि उस दिन आपको जीवन के हर पहलू में स्वतन्त्रता से कैसे क्रिया करनी होती है, उसके प्रति सचेत किया जायेगा। वह बात आपको अन्य कहीं से कभी भी नहीं मिल सकती अतः आपने पूरा भावयुक्त व अफुर होकर आना है और मानना है कि आज मुझे जिस प्रकार का अन्तर्घट में परिवर्तन लाने का आवाहन दिया जायेगा, मैं सच्चे दिल से उसे स्वीकारते हुए अमली जामा पहनाऊँगा और स्वार्थ से परमार्थ बन यानि परमधाम पहुँच विश्राम पाने के योग्य बन जाऊँगा। अब नीति अनुसार अगले तीन माह का होम-वर्क आज से लेकर कार्तिक की मीटिंग तक का ध्यानपूर्वक सुनोः-

सावन की मीटिंग से लेकर कार्तिक की मीटिंग तक

चैत्र की मीटिंग से लेकर सावन की मीटिंग तक का सबक यादगीरी में रखते हुए प्रत्येक सजन ने ग्रन्थ में से कलुकाल वाले कीर्तन तरतीब से पढ़ने आरम्भ करके कार्तिक की मीटिंग तक सारे कीर्तन पढ़कर अर्थ सहित समझ लेने हैं। इसका मुख्य उद्देश्य स्वभावों में से कलुकाल हटा 'हौं-मैं'' को मिटाकर कार्तिक की मीटिंग से पहले घर सतयुग बना लेना है। इसके साथ ही विराट दृष्टि पर खड़े होकर ब्रह्म-वृत्ति को ठहरा लेना है। कैसेः- जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ और निगाह कंचन करके।

इसके अतिरिक्त मीटिंग वाले दिन पढ़े गए बुजुर्गों, बच्चों और गृहस्थ के फर्ज-अदा के पर्चों के अनुरूप अपनी जाँचना कर लेनी है और अपने आप को गृहस्थ-आश्रम ठीक ढंग से चलाने के लिए व हर एक के प्रति अपना फर्ज़-अदा हँसकर करने के लिए कहना व समझाना है।

सजनों आपने यह सब तो सुन लिया। इसी के साथ चैत्र के यज्ञ पर जो आपको पूरे वर्ष का होम-वर्क दिया गया था - नकारात्मकता के भाव-स्वभाव छोड़ सकारात्मकता के भाव अपनाने के लिये यानि शारीरिक भाव त्याग आत्मिक भाव अपनाने के लिये और एकात्मा का दर्शन कर अपना जीवन सफल बनाने के लिये, उसका एक नये तरीके से भी प्रबन्ध किया गया है। आपके लिये यह सब कितने प्रयास हो रहे हैं अतः अब सब हिम्मत दिखाओ और जो भी कहा जाता है, उसको मानना स्वीकार करो। निश्चित ही ऐसा करने से यानि कहना मानने वाले सुपुत्र बनने पर सफलता आपके कदम चूमेगी और फिर आपको कोई हरा नहीं पाएगा।

२८ पुस्तिकाओं (छोटी-छोटी) का विमोचन

यह प्रबन्ध सजनों आपको स्वार्थ से परमार्थ बनाने में अचूक काम करेगा। यह आपके बच्चों के लिये, बड़ों के लिये व कुल समाज के लिये भी है। इस को पढ़-समझ कर आपने खुद स्वयं को परिवर्तित करना है और फिर इसे जन-जन तक पहुँचाना है यानि जागना और जगाना है। फिर कह रहे हैं कि इस क्रिया द्वारा खुद तो जागृति में आना ही है साथ ही सबको भी जागृति में लाना है। आज ध्यान-कक्ष की क्लास के बाद सबने इन पुस्तिकाओं का सैट लेकर जाना है। अब मिलकर बोलोः

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति ज़िन्दाबाद

अब कमजोर मत पड़ना। अपने साथ परिवारों को संगठित रूप से व सभी सहेलियों, दोस्तों को जोड़ लो। इन पुस्तकों को पहले खुद पढ़ना ताकि बताने के योग्य बनो। जब ऐसा करोगे तो आपके अन्दर आत्मविश्वास पैदा होगा। फिर आप सारी बात सबके साथ खुलकर कर सकोगे और सुनने वालों को समझ भी आयेगी। इस तरह आप आसानी से सशक्त हो जायेंगे। अब जिसने कर्मठता से काम करना है वह जोर से बोलेगाः

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

अब श्री साजन जी का डंका कुल दुनियाँ में बजा देना है। जो सजन विदेशों में सुन रहे हैं उन्हें भी इस कार्यपूर्ति हेतु अपने मन में प्रबल इच्छा उत्पन्न करनी है और सबकी प्रबल इच्छा सकार्थ हो उसके लिये इन पुस्तकों में ज्ञान दिया जा रहा है। इस ज्ञान अनुरूप ही आपने क्रिया करनी है, अपनी मनमत नहीं लगानी। ऐसा करने से आपकी तीनों शक्तियाँ यथा इच्छा-शक्ति, ज्ञान शक्ति व क्रिया शक्ति ताकतवर हो जाएगी और आप परोपकार कमाने में समर्थ हो जाओगे। फिर कह उठोगे किः-

जीवन दा मैंनू आनन्द आ गया है जदों दा मैं एह शहनशाह पा लिया है।

आप इस आनन्द को पाने में कामयाब हों इन्हीं शुभकामनाओं के साथ जय सीता राम जी।